

दुआ-37

जब अदाए शुक्र में कोताही का एतराफ़ करते तो यह दुआ पढ़ते

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

बारे इलाहा! कोई शख्स तेरे शुक्र की किसी मन्ज़िल तक नहीं पहुंचा मगर यह के तेरे इतने एहसानात मुजतमअ हो जाते हैं के वह इस पर मज़ीद शुक्रिया लाज़िम व वाजिब कर देते हैं और कोई शख्स तेरी इताअत के किसी दरजे पर चाहे वह कितनी ही सरगर्मी दिखाए, नहीं पहुंच सकता और तेरे इस इस्तेहकाक के मुकाबले में जो बरबिनाए फ़ज़ल व एहसान है, कासिर ही रहता है, जब यह सूरत है तो तेरे सबसे ज़्यादा शुक्रगुजार बन्दे भी अदाए शुक्र से आजिज़ और सबसे ज़्यादा इबादतगुजार भी दरमान्दा साबित होंगे। कोई इस्तेहकाक ही नहीं रखता के तू उसके इस्तेहकाक की बिना पर, बख़्श दे या उसके हक़ की वजह से उससे खुश हो, जिसे तूने बख़्श दिया तो यह तेरा इनआम है, और जिससे तू राजी हो गया तो यह तेरा फ़ज़ल है। जिस अमले कलील को तू कुबूल फ़रमाता है उसकी जज़ा फ़रावां देता है और मुख्तसर इबादत पर भी सवाब मरहमत फ़रमाता है यहां तक के गोया बन्दों का वह शुक्र बजा लाना जिसके मुकाबले में तूने अज़्र व सवाब को ज़रूरी करार दिया और जिसके एवज़ उनको अज़्र अज़ीम अता किया एक ऐसी बात थी के इस शुक्र से दस्ता बरदार होना उनके इख्तियार में था तो इस लेहाज़ से तूने अज़्र दिया (के उन्होंने बड़ख़तेयार खुद शुक्र अदा किया) या यह के अदाए शुक्र के असबाब तेरे कबज़ए कुदरत में न थे (और उन्होंने खुद असबाबे शुक्र मुहय्या किये) जिस पर तूने उन्हें जज़ा मरहमत फ़रमाई (ऐसा तो नहीं है) बल्के ऐ मेरे माबूद! तू उनके जुमला उमूर का मालिक था, कबल इसके के वह तेरी इबादत पर कादिर व तवाना हों और तूने उनके लिये अज़्र व सवाब को मुहय्या कर दिया था कबल इसके के वह तेरी इताअत में दाख़िल हों और यह इसलिये के तेरा तरीकाए इनआम व इकराम तेरी आदते तफ़ज़्जुल व एहसान और तेरी रौशन अफ़ो व दरगुजर है। चुनांचे तमाम कायनात उसकी मारेफ़त है के तू जिस पर अज़ाब करे उस पर कोई जुल्म नहीं करता और गवाह है इस बात की के जिसको तू मुआफ़ कर दे उस पर तफ़ज़्जुल व एहसान करता है। और हर शख्स इकरार करेगा, अपने नफ़्स की कोताही का उस (इताअत) के बजा लाने में जिसका तू मुस्तहक़ है। अगर शैतान उन्हें तेरी इबादत से न बहकाता तो फिर कोई शख्स तेरी नाफ़रमानी न करता और अगर बातिल को हक़ के लिबास में उनके सामने पेश न करता तो तेरे रास्ते से कोई गुमराह न होता। पाक है तेरी ज़ात, तेरा लुत्फ़ व करम, फ़रमाबरदार हो या गुनहगार हर एक के मामले में किस कद्र आशकारा है। यूं के इताअत गुजार को उस अमले ख़ैर पर जिस के असबाब तूने खुद फ़राहम किये हैं जज़ा देता है और गुनहगार को फ़ौरी सज़ा देने का इख़तेयार रखते हुए फिर मोहलत देता है। तूने फ़रमाबरदार व नाफ़रमान दोनों को वह चीज़ें दी हैं जिनका उन्हें इस्तेहकाक न था। और इनमें से हर एक पर तूने वह फ़ज़ल व एहसान किया है

जिसके मुकाबले में उनका अमल बहुत कम था। और अगर तू इताअत गुजार को सिर्फ उन आमाल पर जिनका सरो सामान तूने मुहय्या किया है जज़ा देता तो करीब था के वह सवाब को अपने हाथ से खो देता और तेरी नेमतें उससे ज़ायल हो जातीं लेकिन तूने अपने जूद व करम से फ़ानी व कोताह मुदत के आमाल के एवज़ तूलानी व जावेदानी मुदत का अज़्र व सवाब बख़शा और कलील व ज़वाल पज़ीद आमाल के मुकाबले में दाएमी व सरी जज़ा मरहमत फ़रमाई, फिर यह के तेरे ख़वाने नेमत से जो रिज़क खाकर उसने तेरी इताअत पर क़वत हासिल की उसका कोई एवज़ तूने नहीं चाहा और जिन आज़ा व जवारेह से काम लेकर तेरी मग़फ़ेरत तक राह पैदा की उसका सख़्ती से कोई मुहासेबा नहीं किया। और अगर तू ऐसा करता तो इसकी तमाम मेहनतों का हासिल और सब कोशिशों का नतीजा तेरी नेमतों और एहसानों में से एक अदना व मामूली किस्म की नेमत के मुकाबले में ख़त्म हो जाता और बक्रिया नेमतों के लिये तेरी बारगाह में गिरवी होकर रह जाता (यानी उसके पास कुछ न होता के अपने को छुड़ाता) तो ऐसी सूरत में वह कहां तेरे किसी सवाब का मुस्तहेक़ हो सकता था? नहीं! वह कब मुस्तहक़ हो सकता था।

ऐ मेरे माबूद! यह तो तेरी इताअत करने वाले का हाल और तेरी इबादत करने वाले की सरगुज़शत है और वह जिसने तेरे एहकाम की ख़िलाफ़वर्ज़ी की और तेरे मुनहेयात का मुस्तकिब हुआ उसे भी सज़ा देने में तूने जल्दी नहीं की ताके वह मासियत व नाफ़रमानी की हालत को छोड़कर तेरी इताअत की तरफ़ रूजु हो सके। सच तो यह है के जब पहले पहल उसने तेरी नाफ़रमानी का क़स्द किया था जब ही वह हर उस सज़ा का जिसे तूने तमाम ख़ल्क के लिये मुहय्या किया है मुस्तहेक़ हो चुका था तो हर वह अज़ाब जिसे तूने उससे रोक लिया सज़ा व उक़बत का हर वह जुमला जो उससे ताख़ीर में डाल दिया, यह तेरा अपने हक़ से चश्मपोशी करना और इस्तेहकाक़ से कम पर राज़ी होना है।

ऐ मेरे माबूद! ऐसी हालत में तुझसे बढ़कर कौन करीम हो सकता है और उससे बढ़कर के जो तेरी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ तबाह व बरबाद हो कौन बदबख़्त हो सकता है? नहीं! कौन है जो उससे ज़्यादा बदबख़्त हो। तू मुबारक है के तेरी तौसीफ़ लुत्फ़ व एहसान ही के साथ हो सकती है। और तू बुलन्दतर है इससे के तुझसे अद्ल व इन्साफ़ के ख़िलाफ़ का अन्देशा हो जो शख़्स तेरी नाफ़रमानी करे तुझसे यह अन्देशा हो ही नहीं सकता के तू उस पर ज़ुल्म व जौर करेगा और न उस शख़्स के बारे में जो तेरी रिज़ा व ख़ुशनूदी को मलहूज रखे तुझसे हक़तलफ़ी का ख़ौफ़ हो सकता है, तू मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मेरी आरज़ुओं को बर ला और मेरे लिये हिदायत और रहनुमाई में इतना इज़ाफ़ा फ़रमा के मैं अपने कामों में तौफीक़ से हमकिनार हूँ इसलिये के तू नेमतों का बख़शने वाला और लुत्फ़ व करम करने वाला है।